विषयानुक्रम

पृष्ठ संख्या

भूमिका ।

कृतज्ञता-ज्ञापन ।

प्रथम अध्याय -

शेवडे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व। 1 — 17

द्वितीय अध्याय -

शेवडे के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय। 18 — 37

तृतीय अध्याय -

शेवडे के उपन्यासोंमें चित्रित नारी-पात्र। 38 — 85

चतुर्थ अध्याय -

शेवडे के उपन्यासोंमें चित्रित नारी-पात्रों की विशेषताएँ। 86 — 96

पंचम अध्याय - 97 — 100

उपसंहार।

आधार ग्रंथ सूची।

संदर्भ ग्रंथ सूची।

भूमिका

कृतज्ञताज्ञापन

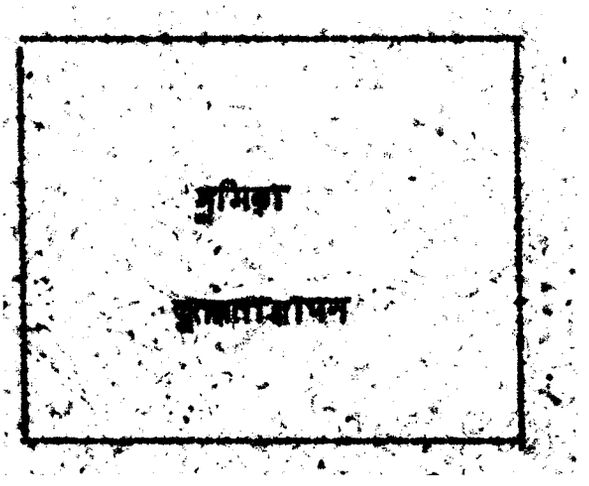
भूमिका

भूमिका

आधुनिक युग में उपन्यासों की उपादेयता और लोकप्रियता अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा अधिक है। आज उपन्यास मानव जीवन का चित्र ही नहीं किंतु सप्राण प्रतिबिंब है। दिन-प्रतिदिन नये नये साहित्यकार औपन्यासिक जगत में अवतरीत होकर मानवीय अनुभूति को साहित्य में अभिव्यक्त करने की चेष्टा करते आये हैं। उपन्यासकार शेवडे भी इनमें से एक थे। शिवाजी विश्वविद्यालयकी ओर से बी॰ ए॰ भाग तीन के लिए "विशेष लेखक का अध्ययन" के लिए अनंत गोपाल शेवडे को निर्धारित किया गया था। तब उनके "निशागीत" और "मंगला" इन दो उपन्यासों का अध्ययन करना पडा। उस समय पढे इन उपन्यासोंमें शेवडेजीने किया नारी व्यथा का उद्घाटन मुझे बहुतही प्रभावित किया था। इन उपन्यासोंमें वर्णित आदर्श प्रेम की नयी व्याख्या, उनकी समस्याएँ, त्याग और सेवा का आदर्श, कलाकार की व्यथा-वेदनाओंको दिया हुआ स्वर, हृदय परिवर्तन की बाते, आदर्श भारतीय नारी का रूप आदि बातों को मेरे मन पर गहरा असर पडा था। और उसी समय से उनके उपर समग्र अध्ययन करने की इच्छा उत्पन्न हुई थी। लेकिन अनेक असुविधाओंके कारण यह इच्छा मैं तुरंत पूर्ण नहीं कर सका। जब मैं एम्॰ फिल्॰ में प्रवेश लिया तब शोध प्रबंधिका के बारेमें छात्रोंमें चर्चा होने लगी तब मेरे मनमें मेरी अतृप्त इच्छा फिर प्रकट हो गयी। यह बात मैंने अपने गुरु के सामने रखा तो वे तुरंत राजी हो गए और मैंने तय किया कि शेवडे के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रोंपर ही शोध कार्य करूँगा। इस हेतु उनके संदर्भ में प्रकाशित सामग्री को ढूंढने का प्रयास किया, पर बडी खेद की बात हैं कि - स्व॰अनंत गोपाल

शोवडे साहित्यकार के रूपमें उपेक्षित से रह गये हैं। अबतक शोवडेजी के संदर्भ में बाँके बिहारी भटनागर व्दारा संपादित "शोवडे - व्यक्तित्व विचार और कृति" डॉ॰श्री॰ना॰ गुंजीकरजी का शोध ग्रंथ "अनंत गोपाल शोवडे और उनका साहित्य" और डॉ॰सुनील कुमार लवटे जी का "शोवडे -व्यक्तित्व एवं कृतित्व" ये तीन ही ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन "अनंत गोपाल शोवडे के उपन्यासोंमें चित्रित नारी-पात्र" इस दृष्टिसे अध्ययन अभितक नहीं हुआ है। इसलिए मेरे अध्ययन के लिए मैंने इस विषय को चुन लिया।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में मैंने शोवडे के उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्रों पर विचार किया है। प्रबंध के प्रारंभ में मेरे मन में कुछ प्रश्न खडे हुए थे निम्न प्रकार के है।

[१] शोवडे के उपन्यासोंमें किस प्रकार के नारी पात्र है ?

[२] शोवडे ने अपने नारी-पात्रों की कौनसी विशेषताओंको दिखाया है ?

[३] शोवडे का नारी के प्रति कौनसा दृष्टिकोण है ?

इन सवालों का जबाब ढूंढने के लिए मैंने शोवडे के उपन्यासोंके नारी पात्रों का अनुशीलन करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध पाच अध्यायोंमें विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में शोवडे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षिप्त में विचार प्रकट किया है। किसी भी कलाकार की कला का कलाकार के जीवन से घनिष्ट संबंध होता है। शोवडे के व्यक्तित्व के पहलु में शिक्षा, स्वधर्म के प्रति श्रध्दा, पत्रकारिता आदि को मैंने चित्रित करने का प्रयत्न

किया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत शोवडे के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके औपन्यासिक विशेषताओं को भी आपके सामने रखने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय में शोवडे के नारी पात्रों का परिचय दिया हैं। शोवडे ने अपने उपन्यास में चित्रित नारियाँ आधुनिक, बुध्दिवादी हैं। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के प्रति सजग हैं इन पर गहराई से विचार किया गया है।

चतुर्थ अध्यायमें शोवडेने अपने उपन्यासोंमें चित्रित नारियोंका चित्रण अपनी अलग अलग विशेषताओं को लेकर किस तरह सामने आयी इसका विवरण इसमें किया है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है। इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यासकार का नारी के प्रति दृष्टिकोण तथा उनके उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों के विशेषताओं पर संक्षिप्त विवेचन किया है।

कृतज्ञताज्ञापन -

मेरा यह लघु शोध प्रबंध का प्रयास मेरे श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. बी.बी.पाटील जी के कुशल निर्देशन का ही प्रति फल है। मेरा यह सौभाग्य है कि उनके जैसे कुशल निर्देशक मुझे प्राप्त हो गए। शोवडे के उपन्यासों की बहुत बडी संख्या और अत्यधिक पृष्ठ आदिके कारण मैं केवल उपन्यास पढते-पढते ही थक गया था। शोधकार्य करने की

इच्छा और उचित दिशा ही नहीं मिल रही थी, परंतु डॉ॰ बी॰ बी॰ पाटीलजी का आत्मिय सहयोग और उचित मार्गदर्शन के कारण मैं यह शोधकार्य पूरा कर सका। अपनी अत्यंत कार्यव्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देशन के व्दारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया। इसलिए मैं डॉ॰ बी॰ बी॰ पाटीलजी का अत्यंत "कृतज्ञ एवं" ऋणी हूँ।

इसके साथही अन्य प्राध्यापक आदरणीय डॉ॰ सौ॰ शशीप्रभा जैन, डॉ॰ व्ही॰ के॰ मोरे, प्रा॰ आय॰ आर॰ मोरे [भोगावती महाविद्यालय कुरुक्ली] प्रा॰ कणाबरकर, प्रा॰ वेदपाठक, प्रा॰ आर॰ पी॰ रोटे, प्रा॰ एस॰ एस॰ सावंत [विलिंग्डन कॉलेज, सांगली] आदिने मुझे जो सहकार्य किया उसके लिए मैं उनका हार्दिक आभारी हूँ।

मेरे परिवार के सदस्योंने भी इस लघु-प्रबंध के लेखन के लिए मुझे उत्साह दिया अत: मैं उनका भी ऋणी हूँ। इस लघु प्रबंध के लेखन कार्य में मुझे मेरे हितैषि मित्र आर॰ पी॰ सातपूते ने भी मुझे बडी सहाय्यता की इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूँ।

यह लघु प्रबंध पूरा करने के लिए सौ॰ भदे [ग्रंथपाल, महावीर कॉलेज, कोल्हापुर] बॅ॰ बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, श्री॰ कुलकर्णी [भोगावती कॉलेज, कुरुक्ली] आदिने समय समयपर मुझे ग्रंथो की सहायता दी। अत: उनका भी मैं आभारी हूँ।

अंतमें यह लघु-शोध प्रबंध अत्यंत अल्प समय में टंकलिखित करने का कार्य सौ॰ आर॰ आर॰ कुलकर्णी ने और उनके सहकारीयों ने किया है

अत: उनका भी आभारी हूँ।

इस लघु प्रबंध को मैंने यथा शक्ति परिपूर्ण करने का प्रयत्न किया है, इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी आनंद प्राप्त हुआ तो मैं मेरे श्रम सार्थक समझूंगा।

कोल्हापुर
दिनांक ३०-६-१९९३.

शोध छात्र

[आनंदा केशव कुंभार]